3 ऐसा योगी क्यों न अभय पद पावे

ऐसा योगी क्यों न अभय पद पावै,
सो फेर न भव में आवै ।।टेक.।।

संशय विभ्रम मोह–विवर्जित, स्वपर स्वरूप लखावै ।
लख परमातम चेतन को पुनि, कर्म कलंक मिटावै।।१।। ऐसा.

भवतन भोग विरक्त होय तन, नग्न सुभेष बनावै ।
मोह विकार निवार निजातम–अनुभव में चित लावै।।२।। ऐसा.

त्रस–थावर वध त्याग सदा, परमाद दशा छिटकावै ।
रागादिकवश झूठ न भाखै, तृणहु न अदत गहावै।।३।। ऐसा.

बाहिर नारि त्यागि अंतर, चिद्ब्रह्म सुलीन रहावै ।
परमाकिंचन धर्मसार सो, द्विविध प्रसंग बहावै।।४।। ऐसा.

पंच समिति त्रय गुप्ति पाल, व्यवहार–चरनमग धावै ।
निश्चय सकल कषाय रहित ह्वै, शुद्धातम थिर थावै।।५।। ऐसा.

कुंकुम पंक दास रिपु तृण मणि, व्याल माल सम भावै ।
आरत रौद्र कुध्यान विडारे, धर्म शुकलको ध्यावै।।६।। ऐसा.

जाके सुख समाज की महिमा, कहत इन्द्र अकुलावै ।
'दौल' तासपद होय दास सो, अविचल ऋद्धि लहावै।।७।। ऐसा.

ऐसा योगी (जिसका स्वरूप नीचे वर्णित है) अभय अर्थात् शाश्वत पद क्यों नहीं प्राप्त करेगा, अर्थात् करेगा ही। जिससे संसार में फिर उसका आवागमन नहीं होगा।

जो संशय, विभ्रम और विमोह से भिन्न, अपना और अन्य का अर्थात् स्व और पर के भेद स्वरूप को स्पष्ट जानता व देखता है। जो अपने परमात्म स्वरूप को जानकर आत्मा पर लगे कर्मरूपी कलंक को मिटाता है, ऐसा योगी शाश्वत पद क्यों नहीं प्राप्त करेगा।

जो संसार—शरीर व भोगों से विरक्त होकर नग्न वेश को धारण करता है और मोहनीय कर्म के विकारों को मिटाकर अपनी आत्मा के अनुभव में अपने मन को लगाता है, ऐसा योगी अभय पद क्यों नहीं प्राप्त करेगा।

जो सदैव प्रमाद दशा को छोड़कर स्थावर (एकेन्द्रिय) और त्रस (दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय) जीवों की हिंसा का त्यागी हो और राग—द्वेष के वश होकर भी कभी झूठ न बोले और बिना दिया हुआ एक तिनका भी ग्रहण न करे, ऐसा योगी अभय पद क्यों न प्राप्त करेगा।

जो बाह्य में स्त्री त्याग अर्थात् पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे तथा अपने अंत:करण में अपने चैतन्यगुणों में निमग्न रहवे और पूर्णतया धर्म का सार रूप अपरिग्रह अर्थात् बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के परिग्रह से रहित जीवन का निर्वाह करे, ऐसा योगी अभय अर्थात् शाश्वत पद क्यों नहीं प्राप्त करेगा।

जो व्यवहार में पाँच समिति, तीन गुप्ति का निरतिचार पालन करते हुये शुद्ध आचरण को धारण करे और फिर निश्चय से सभी कषायों को छोड़कर अपने शुद्ध आत्मध्यान में सदा स्थिर हो, ऐसा योगी अभय अर्थात् शाश्वत पद क्यों नहीं प्राप्त करेगा।

केसर या कीचड़, शुत्र या नौकर, मणि या तिनका, सर्प हो या माला इन सबमें अर्थात् अनुकूल व प्रतिकूल दोनों संयोगो में समताभाव रखे। आर्त और रौद्र नाम के दोनों अपध्यानों को छोड़कर धर्म और शुक्ल ध्यान को ध्यावे, ऐसा योगी अभय पद क्यों नहीं प्राप्त करेगा।

जिसके अलौकिक सुख के भंडार की महिमा का वर्णन करने में इन्द्र भी समर्थ नहीं है अर्थात् इन्द्र भी उनके गुणों को पूर्ण रूप से नहीं कह सकता। ऐसे योगी के लिये दौलतरामजी कहते हैं कि जो ऐसे योगी मुनिवर के चरणों की भक्ति करता है, सेवा करता है वह स्थिर रूप से शाश्वत ऋद्धियों को प्राप्त करता है।